लेखक की पुस्तक

“तंत्र-मंत्र और टोटके”

का मूल सार-संक्षेप

सरलतम धनदायक उपाय

हमारा देश धर्मपरायण है। यहॉ के कण-कण में आध्यात्मिक ऊर्जा का समावेश है। मैंने भी पदार्थ तंत्र को धार्मिक कृत्यों से इसीलिए जोड़कर रखा है ताकि इस माध्यम से हम ईश्वर से संबंध स्थापित करते हुए लौकिक एवं पारलौकिक सुखों का भरपूर आनंद उठा सकें।

पूजा-अर्चना के लिए ईशान कोण का चयन ऋषि-मुनियों ने व्यर्थ ही नहीं किया है। पूर्वाभिमुख बैठ कर साधना करने से प्रातःकालीन उदीयमान सूर्य देव की स्वर्णिम किरणों का पूर्णलाभ साधक को मिलता है। हमारी काया में उत्तरी ध्रुव अर्थात् मस्तिष्क के सहस्त्रार चक्र, आज्ञा चक्र एवं ब्रम्हरंध्र जैसे कई सूक्ष्म शक्ति केन्द्र स्थित हैं। इनका संबंध सूर्य से हो जाने पर यह चैतन्य होने लगते है और अतींद्रिय क्षमताएँ एवं रिद्धि-सिद्धियॉ साधक को हस्तगत होने लगती है। सूर्य ओजस-तेजस एवं वर्चस्व का स्त्रोत है। प्रतिमाओं का मुख पूरब, पश्चिम अथवा दक्षिण दिशा में इसीलिए रखा जाता है ताकि साधक का मुह सदैव पूरब, पश्चिम अथवा उत्तर

दिशा में रहे। यह सूर्य की जीवनदायिनी प्राण-ऊर्जा से लाभान्वित होता रहे। सदैव ध्यान रखें कि ज्ञान प्राप्ति के लिए उत्तर दिशा में उत्तराभिमुख, धन-संपदा हेतु पूर्व दिशा में पूर्वाभिमुख तथा सुख-शान्ति हेतु पश्चिम दिशा में पश्चिमाभिमुख होकर जप, पूजा अथवा साधना करें।

धनसंबंधी अभीष्ट कामना के लिए एक सरल-सा उपाय अवश्य परखकर देखें। पता नहीं किसको किस उपक्रम में कहॉ लाभ मिल जाए? अपनी लम्बाई के ठीक बराबर 14 कच्चे सूत ले लें। इनमें से 7 को हल्दी के रंग में पीला रंग लें सात को हरश्रृंगार के फूलों के रंग से लाल। इनको सुखा लें। 7 रविवार को प्रातः उगते हुए सूर्य देव के सम्मुख मुह करके खड़े हो जाएं। 7 बार गणपति देव का ध्यान करके अपनी धन संबंधी कार्य दोहरायें और अंत में पीले रंग का सूत जला दें। इसी प्रकार सूर्यास्त के समय पश्चिम दिशा की ओर 7 रविवार को लाल रंग का सूत 7 बार गणपति जी का ध्यान करके 7 बार अपनी अभीष्ट इच्छा दोहराने के बाद जला दें। धागा जलाने का क्रम एक ,रविवार को प्रातः एवं सांयकाल जलाने का भी आप रख सकते है और प्रातःकाल में एक रविवार और सांयकाल में दूसरा रविवार भी चुन सकते है। परन्तु जो क्रम आप चुन रहे है वही अतं तक अनुसरण करना है। जले हुए धागो की राख जहॉ गिरे, वहीं पड़ी रहने दें।